किराये का मकान

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,
पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

इस सृष्टि में मनुष्य सबसे बुद्धिमान प्राणी है। किसी कार्य को करने के लिए मनुष्य अपनी बुद्धि और विवेक का उपयोग करता है। मनुष्य समाज में रहता है। इसलिए वह सामाजिक प्राणी है। मानव के पास विकसित इन्द्रियां हैं। इन्द्रियों के माध्यम से वह व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त करता है। मनुष्य को यह नहीं भूलना चाहिए कि मानव तन धर्म करने के लिए प्राप्त हुआ है। कहा भी गया है कि शरीरमाद्यं खलु धर्म साधनम् अर्थात् शरीर धर्म का साधन है। हमें गृहस्थ जीवन के कार्यों को करते हुए आत्म चिन्तन, ईश्वर स्मरण करते रहना चाहिए। किसी का दिल नहीं दुखाना चाहिए। सभी प्राणियों को अपने समान मानना चाहिए। मानव का शरीर पूर्वजन्म में किये गये पुण्य कर्मों का परिणाम है। यह शरीर नौ द्वारों वाला है। शरीर को चलाने वाला आत्मा है। जड़ और चेतन के संयोग से यह शरीर कार्य कर रहा है।

प्रत्येक व्यक्ति अपनी रोजी–रोटी कमाकर घर में आनन्दपूर्वक रहता है। पशु–पक्षी, मानव तथा अन्य प्राणी दिनभर अपना कार्य करते रहते हैं। सांयकाल अपने घरों में आकर परिवार के साथ प्रेम से रहते हैं। पशु–पक्षियों की अपनी–अपनी भाषाएं हैं। वे एक–दूसरे के भावों को समझते हैं। किसी भी प्रकार का भय आने पर पशु–पक्षी विशेष आवाज करते हैं जिससे सभी सावधान हो जाते हैं। पक्षियों का भी अपना घोंसला होता है। दूर देश से आकर के पक्षी अपने घोंसले का निर्माण करते हैं और अपने परिवार के साथ रहते हैं। जिसमें हम रहते हैं वह मकान है। यह भौतिक संसाधनों का मकान है। इसी तरह शरीर भी एक मकान है। इसमें आत्मा का वास है। जिस व्यक्ति के पास मकान नहीं होता वह किराये के मकान में रहता है। मकान मालिक जब मकान से निकाल देता है तो दूसरी जगह मकान खोजना पड़ता है। शरीर और आत्मा का भी सम्बन्ध मकान मालिक और किरायेदार जैसा है। यह इन्द्रिय जगत का स्थान है। इन्द्रियां विषयों को ग्रहण करती हैं और विषयों का स्वाद लेने में ही लगी रहती हैं। घर पुराना

हो जाने पर गिरने की आशंका से दूसरे घर का निर्माण करना पड़ता है। गीता में कहा गया है कि मनुष्य पुराने वस्त्रों को त्यागकर नवीन वस्त्रों को धारण करता है। आत्मा भी भौतिक शरीर को त्यागकर नये शरीर को धारण करती है। यह शरीर किराये का मकान है। अतः इससे मोह नहीं करना चाहिए।

इस संसार में आकर मानव ने क्या खोया और क्या प्राप्त किया? इस बात की समीक्षा होनी चाहिए। मानव व्यवहार जगत में जीवनयापन करता है। उसको समय–समय पर समीक्षा करनी चाहिए। उसको समीक्षा कर यह जानना चाहिए कि मैं कौन हूँ? मैं कहां से आया हूँ? मैं कहॉ जाऊंगा? इन तीनों प्रश्नों के उत्तर में सब कुछ समाया हुआ है। मानव जीवन बहुमूल्य है। गोस्वामी तुलसीदासजी ने लिखा है कि–

बड़े भाग्य मानुष तन पावा,
सूर नर मुनि सद्ग्रन्थन गावा।

मानव का शरीर साधन–धाम और मोक्ष का द्वार है। जीवन और जगत की दृष्टि से इसका बहुत मूल्य है। शरीर यदि स्वस्थ रहता है, तभी सभी प्रकार की धार्मिक क्रियाएं की जा सकती हैं। मानव जीवन को केवल कोरा स्वप्न ही नहीं कहा जा सकता। हम या तो अतीत में जीते हैं अथवा भविष्य में रहते हैं। प्रत्येक क्षण अतीत बनता जाता है। भविष्य को हम वर्तमान बनाते रहते हैं। हमारे जीवन के आगे–पीछे मृत्यु का साम्राज्य रहता है। सुबह होती है, शाम होती है, उम्र इसी तरह बीतती जाती है। जब अन्त समय आता है तब ऐसा लगता है कि इतने वर्षों का समय कितनी जल्दी व्यतीत हो गया। इतने वर्षों पहले होने वाला बाल्यकाल कल जैसी घटना लगता है। सब कुछ सीनेमा दृश्य की तरह आँखों के सामने नाचने लगता है। ऐसा लगता है कि सब कुछ स्वप्न था। जीवन के सुख–दुःखों की स्मृति स्वप्न के सुखद–दुःखद अनुभवों की भांति शेष रह जाती है, परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि मानव जीवन समस्त अनुभव स्पप्न मात्र हैं।

मानव कर्म का परिणाम भोग लेने के पश्चात इस संसार से बिदा हो जाता है। जीवनभर की कमाई यहीं छूट जाती है। शरीर भी यहीं छूट जाता है और पंचतत्त्व में विलीन हो जाता है।

जीव केवल कर्म लेकर आता है और कर्म लेकर ही जाता है। इसलिए इस संसार में आने के बाद जीव को सत्कर्म करना चाहिए। सत्कर्म करने से जीव की ऊर्ध्वगति होती है। पुण्य और पाप का लेखा जोखा सुरक्षित रहता है। समय के अनुसार वह उदय में आता है। सुख–दुःख के रूप में प्राणी को उसका भोग करना पड़ता है। जो जैसा कर्म करता है उसको वैसा फल भोगना पड़ता है। समय आने पर कर्म अपना फल अवश्य देता है। कोई व्यक्ति किसी का एक बाल भी टेढ़ा नहीं कर सकता। सब कुछ स्वकृत कर्मों का परिणाम है। **जाको राखे साइंयां मार सके ना कोय, बाल न बांका हो सके जो जग बैरी होय**। यह कहावत यह बताती है कि ईश्वर के अनुकूल रहने पर चाहे सम्पूर्ण संसार विरुद्ध हो जाये, मनुष्य का कोई कुछ भी नुकसान नहीं कर सकता। इस प्रकार मानव जीवन में बहुत कुछ खोता है और बहुत कुछ प्राप्त भी करता है। ये सब भौतिक जीवन से सम्बन्धित वस्तुएं हैं। यह किराये के मकान रूपी शरीर से अध्यात्म चेतना को जागृत करना चाहिए।